# श्री चन्द्रप्रभ विधान (सोमवार)
# माण्डला

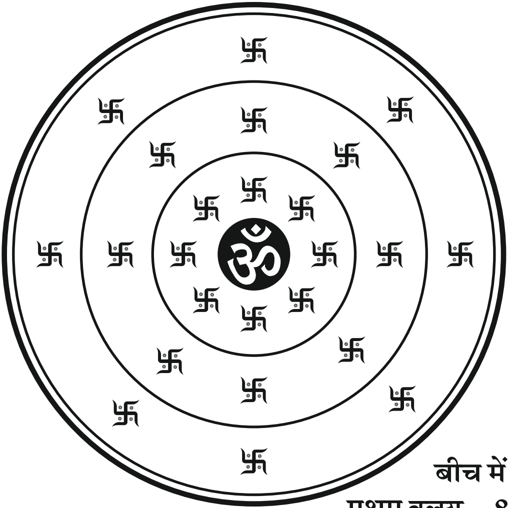

बीच में – ॐ
प्रथम वलय – 8 अर्घ्य
द्वितीय वलय – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय – 8 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

| | | |
|---|---|---|
| कृति | : | **श्री चन्द्रप्रभ विधान** |
| कृतिकार | : | प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति<br>आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज |
| संस्करण | : | द्वितीय, 2026 |
| प्रतियाँ | : | 1000 |
| संकलन | : | स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज<br>मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी,<br>मुनिश्री विपिनसागरजी |
| सहयोगी | : | आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी<br>क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी |
| संपादन | : | ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425<br>ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873 |
| प्राप्ति स्थल | : | 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017<br>2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879<br>3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308<br>4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971<br>5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970 |

पुण्यार्जक :

**सौ.कां. सुगन बाला के जन्मदिन के उपलक्ष में सौ.कां. सुगन बाला किशोर जैन, पुत्र चिन्मय जैन, हर्षल जैन पुत्रवधू श्रुतिका जैन**

96/बी, पार्श्वनाथ नगर, इन्दौर (म.प्र.) मो.: 9993106727

कृति : **श्री चन्द्रप्रभ विधान**
कृतिकार : प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण : द्वितीय, 2026
प्रतियाँ : 1000
संकलन : स्थविर मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
मुनिश्री विभोरसागरजी, मुनिश्री विलक्ष्यसागरजी,
मुनिश्री विपिनसागरजी
सहयोगी : आर्यिका श्री 108 भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री 105 वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्र. आस्था दीदी - मो.: 9660996425
ब्र. प्रदीप भैया - मो.: 7568840873
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017
2. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी, मो.: 9416888879
3. नीरज जैन, लखनऊ, मो.: 9451251308
4. जय अरिहंत टेडर्स, दिल्ली, मो.: 9818115971
5. राजेश जैन, खाकरोट वाले, इन्दौर, मो.: 9425316970

पुण्यार्जक :
**सुरेन्द्रकुमार जैन (बनवार वाले)**
नेमीनगर कालोनी, दमोह (म.प्र.)
मो.: 7000209347, 9039926696

# श्री चन्द्रप्रभ स्तवन

शून्यषट्कैकपूर्वायुः, सार्द्धचापशतोच्छ्रितिः।
महासेनात्मजः पायात्, स जिनश्चंद्रलांछनः।।
(भुजंग-प्रयातं छन्द)
परावर्तनान्य-प्यनंतानि पूर्वं।
कृतानि श्रमोऽभू-दिदानीमतीव।।
त्वमेव प्रभो ! पंचसंसारमुक्तः।
अतः प्रार्थये त्वां श्रृणु त्राहि देव !।।2।।
पुरस्तात् सुभक्त्येरितोऽज्ञोऽपि किंचित्।
ब्रुवे तद्भवेत्केवलं जन्महान्यै।।
स्मृतिस्तेऽप्यनंतानि दुःखानि हंति।
न किं हंति नागान् शिशुः सिंहिकाया।।3।।
प्रभो ! त्वां विलोक्य प्रहृष्टं मनो मे।
ध्वनिर्गद्गदो मोदवाष्पस्रवंत्यौ।।
दृशौ स्तश्च साफल्य-जन्मापि मेऽभूत्।
अतः कुड्मलीकृत्य हस्तौ प्रणौमि।।4।।
शशांकांघ्रिसेव्यः परां शांतिमाप्तः।
भवेद्भव्यजंतोर्भवाग्निप्रशान्त्यै।
यतीनां मनो-ऽम्भोजभास्वान् प्रभुस्तं।
सुचंद्रप्रभं नौमि चंद्रांशुगौरं।।5।।
नमो चन्द्रप्रभं देवं, महासेन सुतं वरं।
नमः तीर्थकरं पूज्यं, 'विशद' ज्ञान धारिणाः।।6।।

# श्री चन्द्रप्रभ स्तवन

## दोहा

श्री जिनेन्द्र की भक्ति है, नित नव मंगल वान।
'विशद' भाव से कर मिले, मुक्ती का सोपान।।

हे ज्ञान दिवाकर चन्द्र प्रभो!, जय धर्म प्रभाकर चन्द्र प्रभो!।
जय शांति सुधाकर चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।। 1।।
हे धर्म प्रचारक चन्द्र प्रभो!, हे कष्ट निवारक चन्द्र प्रभो!।
हे रोग विनाशक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।। 2।।
हे धर्म विधायक चन्द्र प्रभो!, हे शांति प्रदायक चन्द्र प्रभो!।
हे शिव दर्शायक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।। 3।।
हे रोग निवारक चन्द्र प्रभो!, हे द्वेष निवारक चन्द्र प्रभो!।
हे कर्म विघातक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।। 4।।
हे श्री रति नायक चन्द्र प्रभो!, जय-जय श्री दायक चन्द्र प्रभो!।
हे विघ्न विनायक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।। 5।।
हे पाप विमोचक चन्द्र प्रभो!, हे आतम शोधक चन्द्र प्रभो!।
हे संकट मोचक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।। 6।।
जय मुक्ति रमापति चन्द्र प्रभो!, जय श्रेष्ठ महायति चन्द्र प्रभो!।
जय जय हे जिनपति चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।। 7।।
हे कर्म विदारक चन्द्र प्रभो!, हे बुद्धि विशारद चन्द्र प्रभो!।
हे शरद नारद चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।। 8।।

## दोहा

चरण कमल में आपके, झुका रहे हम शीश ।
ऋद्धि सिद्धि सम्पति बढ़े, हे त्रिभुवन पति ईश!।।

# श्री चन्द्रप्रभु जी पूजन

स्थापना

**दोहा – चन्द्रांकित लक्षण चरण, कांती चन्द्र समान।**
**आह्वानन् करते हृदय, चन्द्रनाथ भगवान।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

**श्री जिन पद में नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक हम रोग नशाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।1।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्दन हम गोशीर चढ़ाएँ, भवाताप अपना विनशाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।2।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षत से जिन पूज रचाएँ, अक्षय पद हम भी पा जाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।3।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरभित पुष्प चढ़ा गुण गाएँ, काम रोग हम पूर्ण नशाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।4।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन पद सुचरु चढ़ा गुण गाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।5।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दीपक रत्नमयी प्रजलाएँ, मोह महातम दूर हटाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।6।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**धूप अग्नि में यहाँ जलाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।7।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**फल से जिनपद पूज रचाएँ, मोक्ष महा फल हम पा जाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।8।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्ट द्रव्य का अर्घ्य सजाएँ, विशद अनर्घ्य सुपदवी पाएँ।**
**चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।9।।**

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **महिमा जिनकी है अगम, गरिमा का ना पार।**
**शांती धारा दे रहे, जिन पद बारम्बार।।**

(शांतिमय शांतिधारा)

दोहा – **गुणानन्त के कोष हैं, चन्द्रप्रभ भगवान।**
**पुष्पांजलि करते चरण, करते हम गुणगान।।**

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

# श्री चन्द्रप्रभ जी के पंचकल्याणक के अर्घ्य

**चैत कृष्ण पाँचें को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी ।**
**चन्द्रप्रभु की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।1।।**

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्या गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पौष कृष्ण एकादशि भाई, जन्म लिए जिनवर शिवदायी ।**
**चन्द्रप्रभु की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।2।।**

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पौष कृष्ण एकादशि पाए, उत्तम संयम तप अपनाए ।**
**चन्द्रप्रभु की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।3।।**

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादश्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फाल्गुन वदि सातें जिन पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए ।**
**चन्द्रप्रभु की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।4।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुणकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**फाल्गुन शुक्ल सप्तमी स्वामी, हुए आप मुक्ती पथगामी ।**
**चन्द्रप्रभु की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।5।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुण शुक्ल सप्तम्यां ललित कूट सम्मेद शिखरस्य मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

# जयमाला

दोहा – चन्दप्रभ पद पूजते, जो भी बालाबाल।
इच्छित फल पावें सदा, गावें यह जयमाल।।

।। विष्णुपद छन्द ।।

चन्द्रप्रभु की महिमा सारे, इस जग ने गाई।
शरणागत बनके लोगों ने, पाई प्रभुताई।।
चन्द्रपुरी में जन्म लिए प्रभु, सुर नर हर्षाए।
मात सुलक्ष्मणा महासेन गृह, विशद हर्ष छाये।।1।।
राज पाट सुख भोग प्राप्त भी, तुम्हें नहीं भाए।
छोड़ चले गृह जाल जानकर, संयम अपनाए।।
निज आतम का ध्यान लगाकर, योग आप धारे।
विशद ज्ञान पाया प्रभु तुमने, नशे कर्म सारे।।2।।
समन्तभद्र मुनिवर ने तुमको, भाव सहित ध्याया।
प्रकट हुए पिण्डी के फटते, प्रभू दर्श पाया।।
अष्टम तीर्थंकर कहलाए, चन्द्र प्रभु स्वामी।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, मुक्ती पथ गामी।।3।।
तव चरणों में भूत प्रेत की, बाधाएँ जावें।
चरणों की रज माथ लगाते, इच्छित फल पावें।।
दुखिया दर पर आने वाले, दुख खोके जाते।
निर्धन धन की इच्छा करते, इच्छित धन पाते।।4।।

चमत्कार इस सारे जग में, फैला है भाई।
जिसने जो इच्छा की दर पे, वह वस्तू पाई।।
महिमा सुनकर नाथ ! आपके, हम दर पे आए।
अर्घ्य चढ़ाने अष्ट द्रव्य का, 'विशद' चरण लाए।।

दोहा – चन्द्र चाँदनी सम रहे, चन्द्र प्रभू भगवान।
जिनकी अर्चा कर 'विशद', पाना शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – अष्टम तीर्थंकर बने, अष्ट गुणों के ईश।
आठों अंगों को नमित, झुका रहे हम शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

## प्रथम वलयः

दोहा – अरहन्तों के गुण रहे, जग में महति महान।
जिनकी अर्चा को यहाँ, करते हम गुणगान।।

(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्) (चौपाई छन्द)

जन्म के दश अतिशय प्रगटाए, जगत पूज्यता प्रभु जी पाए।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश अतिशय प्रभु ज्ञान के पाए, जब प्रभु केवलज्ञान जगाए।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**चौदह देवोंकृत कहलाते, महिमा प्रभु जी की बतलाते।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।3।।**

ॐ ह्रीं देवकृतातिशय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**दर्शज्ञान सुख वीर्य जगाए, अनन्त चतुष्टय प्रभु प्रगटाए।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।4।।**

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**प्रातिहार्य पाएँ मनहारी, समवशरण में विस्मयकारी।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।5।।**

ॐ ह्रीं प्रातिहार्याष्ट प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**श्रीजिन रहे धर्म दश धारी, इस जग में जो मंगलकारी।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।6।।**

ॐ ह्रीं दश धर्म प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**प्रभु जी दोष अठारह नाशी, होते हैं शिवपुर के वासी।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।7।।**

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**प्रभु जी द्वादश तप शुभ पाएँ, अपने सब जो कर्म नशाएँ।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।8।।**

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**छियालिस मूल गुणों के धारी, हैं अष्टादश दोष निवारी।**
**चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।9।।**

ॐ ह्रीं षड्चत्त्वारिशंद सहिताय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

# द्वितीय वलयः

**दोहा - सिद्धों के गुण आठ हैं, शाश्वत हैं शुभकार।**
**जिनको हम करते यहाँ, वन्दन बारम्बार।।**

द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(मोतियादाम छन्द)

**नशाए ज्ञानावरणी कर्म, जगाए निज आतम का धर्म।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।1।।**

ॐ ह्रीं केवलज्ञान प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दर्शनावरण नशाएँ कर्म, दर्श गुण प्रगटाएँ निज धर्म।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।2।।**

ॐ ह्रीं केवलदर्शन प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**वेदनीय कीन्हे आप विनाश, सुगुण प्रगटाए अव्याबाध।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।3।।**

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**मोहनीय का कर के भी नाश, किए प्रभु सुखानन्त में वास।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।4।।**

ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**आयु का किए नाश भगवान, हुए प्रभु अवगाहन गुणवान।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।5।।**

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**कर्म प्रभु नाम किए हैं अन्त, सुगुण सूक्ष्मत्व पाए गुणवन्त।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।6।।**

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**गोत्र का नाशे नाम निशान, अगुरु लघु पाए गुण भगवान।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।7।।**

ॐ ह्रीं अगुरु-लघु गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**अन्तराय करके कर्म विमुक्त, अनन्तबल प्रगटाए अर्हन्त।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।8।।**

ॐ ह्रीं अनन्तबल गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**कर्म आठों प्रभु किए विनाश, किए प्रभु सिद्धशिला पर वास।**
**प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।9।।**

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म रहित अष्ट गुण संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

# तृतीय वलयः

**दोहा - प्रातिहार्य धारी कहे, तीर्थंकर भगवान।**
**जिनकी अर्चा कर रहे, अतिशय महिमा वान।।**

तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(मोतियादाम छन्द)

**अशोक तरु तल में जिन भगवान, देशना देते महति महान।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।1।।**

ॐ ह्रीं अर्हं अशोक तरु प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**प्रभू का सिंहासन छविदार, शोभते जिसपे मंगलकार।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।2।।**

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**शोभते छत्रत्रय शुभकार, शीश पे श्री जिन के मनहार।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।3।।**

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**रहा भामण्डल अतिशयकार, सप्तभव दर्शाए शुभकार।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।4।।**

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डल प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दिव्य ध्वनि खिरती अपरम्पार, प्रभू की पावन विस्मयकार।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।5।।**

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दुन्दुभि बाजे बजें अनूप, प्रभू के जय का कहें स्वरूप।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।6।।**

ॐ ह्रीं अर्हं दुन्दुभि प्रातिहार्य संयुक्त श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

**चँवर ढौरें चौंसठ शुभ यक्ष, रहे जो प्रभु भक्ती में दक्ष।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।7।।**

ॐ ह्रीं अर्हं चँवर प्रातिहार्य संयुक्त श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**पुष्प वृष्टी हो अपरम्पार, करें जो मानो जय-जय कार।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।8।।**

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्प वृष्टी प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**प्रातिहार्य पाए दिव्य ललाम, करें सुर नर पशु चरण प्रणाम।**
**प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।9।।**

ॐ ह्रीं अर्हं अष्ट प्रातिहार्य संयुक्त श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

**जाप्य :-** ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

## जयमाला

**दोहा - ऊँचे छह सौ हाथ छवि, उज्ज्वल चन्द्र समान।**
**चन्द्र चिन्ह युत पूजते, चन्द्र नाथ भगवान।।**

(पद्धडि छन्द)

**जय चन्द्र जिनेश्वर सुगुण वान, प्रगटाए तुम कैवल्य ज्ञान।**
**प्रभु स्वयं सिद्ध मंगल स्वरूप, विन्मूरति चिन्मूरत स्वरूप।।**

निरपेक्ष निरामय निराकार, हे जिनवर ! शाश्वत समयसार।
जय दर्शन ज्ञान अनन्त वान, जय सौख्य वीर्य गुणमय प्रधान।।
निज साधन से पाये सुसाध्य, आराधन निज कर हुए अराध्य।
निष्काम स्वयं में रहे पाग, जग से निस्पृह हे वीतराग !।।
निर्दूषण जग भूषण जिनेश, नाशे प्रभु जग के सब क्लेश।
रागादि स्वयं जब किए मंद, कर दिए शिथिल निज कर्म बन्ध।।
झूठी ममता पर की विनाश, निज समता में कीन्हे निवास।
तुम हुए सहज ही निर्विकार, हे नित्य निरंजन ! निराकार।।
लक्ष्मी चरणों की बनी दास, तुम सहज हुए उससे उदास।
अद्भुत प्रभुता पाए जिनेश, महिमा फैली जग में विशेष।।
अक्षय अनन्त गुण किए प्राप्त, स्वमेव आप भी बने आप्त।
प्रभु दोष अठारह कर विनाश, स्वभाविक गुण कीन्हे प्रकाश।।

दोहा – कर्मों पर जय प्राप्त कर, हुए आप स्वाधीन।
तव भक्ती में हे प्रभू, रहें सदा ही लीन।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – तव अर्चा करके 'विशद', होवे क्लेश विनाश।
मुक्ती हो संसार से, पूरी होवे आश।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

# श्री चन्द्रप्रभु चालीसा (तिजारा)

दोहा – श्री जिनेन्द्र को नमन कर, जिनवाणी को ध्याय।
वीतराग निर्ग्रन्थ गुरु, के चरणों सिरनाय।।
देहरे के जिन चन्द्र का, चालीसा शुभकार।
'विशद' भाव से गा रहे, पाने सौख्यअपार।।

(चौपाई)

जय श्री चन्द्र प्रभू जिन स्वामी, देहरे वाले शिव पथ गामी।।1।।
शांत छवी मूरत अविकारी, भेष दिगम्बर मुद्रा प्यारी।।2।।
जिनवर नाशा दृष्टिधारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।3।।
देवों के जो देव कहाते, सद्‌भक्तों के कष्ट मिटाते।।4।।
वैजयन्त से चयकर आए, गर्भकल्याण श्री जिन पाए।।5।।
चैत कृष्ण पाँचे शुभकारी, देव रत्न वर्षाए भारी।।6।।
चन्द्रपुरी नगरी कहलाए, महासेन जी राज्य चलाए।।7।।
रही सुलक्ष्मणा जिनकी रानी, जन्मे चन्द्रप्रभू जिन स्वामी।।8।।
पौष वदी ग्यारस कहलाई, सारी जगती हर्ष मनाई।।9।।
जग हितकारी राज्य चलाया, किन्तू जग वैभव ना भाया।।10।।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, प्रभु मन में वैराग्य जगाए।।11।।
राग त्याग मुनि दीक्षा धारी, ध्यान किए होके अविकारी।।12।।
फाल्गुण वदी सप्तमी पाए, प्रभु जी केवल ज्ञान जगाए।।13।।

ललित कूट पावन कहलाए, मोक्ष जहाँ से प्रभु जी पाए।।15।।
समंतभद्र मुनि तुम को ध्याए, पिण्डी फटी दर्श तुम पाए।।16।।
अष्टम तीर्थंकर कहलाते, सोम सुग्रह से शांति दिलाते।।17।।
चमत्कार तुम कई दिखलाए, मन से लोग आपको ध्याये।।18।।
राजस्थान प्रान्त है प्यारा, अलवर जिला में नगर तिजारा।।19।।
उत्तर दिश में देहरा जानो, प्रगटे जहाँ चन्द्रप्रभु मानो।।20।।
सावन सुदि दशमी शुभकारी, तिथि हो गई ये मंगलकारी।।21।।
चिन्ह चन्द्रमा का शुभ पाए, नर नारी जयकार लगाए।।22।।
धवल मूर्ति सोहे मनहारी, जो है पावन अतिशयकारी।।23।।
अतिशय तुमने कई दिखाए, जनता दौड़ी-दौड़ी आए।।24।।
कोई चरणों पूज रचाते, कोई पावन आरति गाते।।25।।
कोई विशद विधान रचाते, कोई शुभ चालीसा गाते।।26।।
फाल्गुन सुदी सप्तमी जानो, भारी मेला जुड़ता मानो।।27।।
शशिधर पावन आप कहाए, ज्ञान प्रकाश आप फैलाए।।28।।
कीर्ति आपकी फैली भारी, गुण गाती है दुनिया सारी।।29।।
भूत प्रेत भी जिन्हें सतावें, उनसे प्राणी मुक्ती पावें।।30।।
दुखिया दर पे जो भी आते, उनके सब संकट कट जाते।।31।।
अन्धा दर पे ज्योती पाए, गूंगे का गूंगापन जाए।।32।।
पुत्रहीन दर पे जो आए, पुत्र सौख्य वह प्राणी पाए।।33।।
ज्ञान हीन सद् ज्ञान जगाए, बुद्धि हीन सद् बुद्धी पाए।।34।।

रोगी अपना रोग नशाए, पर कृत मंत्र भयावह जाए।।35।।
लाखों आते यहाँ सवाली, जाएँ नहीं यहाँ से खाली।।36।।
चरणों की रज है सुखकारी, जीवों के सब संकटहारी।।37।।
गंधोदक जो माथ लगावें, अतिशय शांती प्राणी पावें।।38।।
अखण्ड ज्योति का घृत जो लगाते, उनके सब संकट कट जाते।।39।।
'विशद' आपको जो भी ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़के चालिस बार।
पढ़ो पढा़ओ भक्ति से, पाओ शांति अपार।।
रोग शोक दुख दूर हों, और पाप का नाश।
धन सम्पत्ति का लाभ हो, हो शिवपुर में वास।।

मनोकामनापूर्ण जाप्य :-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री देहरे वाले चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

---

## आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं नि.स्वाहा।

# श्री चन्द्रप्रभु की आरती

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ती पथ गामी। ॐ जय...।। टेक।।
महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी-2।
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी।।1।। ॐ जय...
आतम ज्ञान जगाएँ, सद् दृष्टी धारी-2।
मोह महामद नाशी, स्व पर उपकारी।।2।। ॐ जय...
पंच महाव्रत प्रभु जी, तुमने जो धारे-2।
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे।।3।। ॐ जय...
इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया-2।
केवल ज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया।।4।। ॐ जय...
तुमको ध्याने वाला, सुख शांती पावे-2।
'विशद' आरती करके, मन में हर्षावे।।5।। ॐ जय...
प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये-2।
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये।।6।। ॐ जय...
तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो-2।
भक्त खड़ा चरणों में, सारे कष्ट हरो।।7।। ॐ जय...
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी-2।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथ गामी।। टेक।। ॐ जय..

# चन्द्रप्रभु भजन

तर्ज – चन्दा जैसा रूप है...

चन्दा जैसा रूप है जिनका, चन्द्रप्रभ है नाम।
चन्द्र पुरी के चन्द्र के पद में, बारम्बार प्रणाम।। टेक।।
महा सेन के राजदुलारे, सुलक्षणा माँ के लाल।
चयकर स्वर्ग से गर्भ में आए, हरने जग जंजाल।
जग को जग की निधियाँ देकर, करते मालामाल।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, गाये पूज्य त्रिकाल।
पूज्य रहे भगवान हमारे, पावन तीरथ धाम।। चन्दा...।।1।।
जिनको यह दुनियाँ न भाई, भायी मुक्ती नार।
रचने चले स्वयंवर उससे, सिद्ध सदन के द्वार।।
दूल्हा आप बाराती सारे, सम्यक्त्वी परिवार।
नाचे गावे पूज रचावे, सारा ही संसार।।
हम भी राही बनें मोक्ष के, पाएँ हम शिवधाम।। चन्दा...।।2।।
जिसके दिल में वास आपका, चले मोक्ष की ओर।
हृदय हमारे वास करो प्रभु, पावन चंद चकोर।।
तारण तरण जहाज हो अनुपम, थामो मेरा हाथ।
चरणों में दो शरण प्रभूजी, पाएँ आपका साथ।।
अर्जी मेरी चरणों में यह, शुद्ध हो आतम राम।। चन्दा...।।3।।
चरण शरण में आए हैं हम, ठुकराओ न नाथ !।
हम हैं भूले भटके राही, दे दो हमको साथ।।
मरण समाधी मुक्ती पाने, झुका रहे पद माथ।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, हे त्रिभुवन के नाथ !।।
'विशद' ज्ञान ना पाया जब तक, लेंगे न विश्राम।। चन्दा...।।4।।

# चन्द्रप्रभु स्तवन

## अनुष्टुप छन्द

चन्द्रप्रभ समाकांति, देहे यस्य सुविद्यते।
जिन चन्द्रप्रभ नौमि, सर्व पापोपशान्तये।।1।।

## मालनी छन्द

समवशरण लक्ष्म्या वीक्ष्यमाणः कटाक्षेः,
सुकृत-विकृत चिन्है-रष्टभिः प्रातिहार्यैः।
अविहत विहतारिः प्राज्य वैराग्य भावः,
स्व-पर गुरु नमामि प्राथ्र्य सम्यक् प्रसिद्धः।।2।।

जयति जन सुवन्द्याश्चिमत्कार युक्तः,
शमसुख भरकन्दोऽपास्त कर्मारि वृन्दः।
निखिल मुनि गरिष्ठः कीर्ति सत्तावरिष्ठः,
सकल-सुरत-पूज्यः श्री जिनो चन्द्रनाथाः।।3।।

प्रणत भुवननाथो धर्म तीर्थाधिनाथः,
प्रहत-दुरित-वर्गः प्रोक्त सन्मुक्ति मार्गः।
प्रशमित जनतार्तिः शुद्ध दृग्ज्ञानमूर्तिः,
प्रवर-कनक कान्ति श्रेयसे नोऽस्तु शान्तिः।।4।।

यदमल पद पदमं श्री जिनेशस्त नित्यं,
शतमख शत सेव्यं पद्म गर्भादि वन्द्यम् ।
'विशद' वन कुठारं ध्वस्त मोहांधकारं,
सदखिल सुख हेतुं त्रिप्रकारैर्-नमामि।।5।।

# श्री चंद्रप्रभु पूजन विधान

## स्थापना

**चन्द्रप्रभं नौमि यदीयभाषा, नूनं जिता चन्द्रमसी प्रभासा।**
**नौ चैत् कथं तर्हि तदंघ्रि लघ्नं, नखच्छला-दिन्दु कुटुम्ब मासीत।।**

ॐ ह्रीं चंद्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आहवानन् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।

## अनुष्टुप छन्द

**रचयाम्यर्चनं भक्त्या, वारिभिश्चित्त-हारिभिः।**
**चन्द्रप्रभु जिनं नत्त्वा, कर्म क्षरण हेतवे।।1।।**

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः जलं निर्व. स्वाहा ।

**रचयामयर्चनं भक्त्या, चन्दनैश्चित-नन्दनै ।**
**चन्द्रप्रभु जिनं नत्त्वा, कर्म क्षरण हेतवे।।2।।**

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः चंदनं निर्व. स्वाहा ।

**रचयामयर्चनं भक्त्या, तण्डुलै-रतिनिर्मलैः।**
**चन्द्रप्रभु जिनं नत्त्वा, कर्म क्षरण हेतवे।।3।।**

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अक्षतं निर्व. स्वाहा ।

**रचयामयर्चनं भक्त्या, कुसुमैर्-विगतोपमैः।**

**चन्द्रप्रभु जिनं नत्त्वा, कर्म क्षरण हेतवे।।4।।**

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

**रचयामयर्चनं भक्त्या, पक्वान्नैः सरसैर्-नवैः।।**

**चन्द्रप्रभु जिनं नत्त्वा, कर्म क्षरण हेतवे।।5।।**

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

**रचयामयर्चनं भक्त्या, दीपं-प्रातैः प्रभार्चितैः।**

**चन्द्रप्रभु जिनं नत्त्वा, कर्म क्षरण हेतवे।।6।।**

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्व. स्वाहा।

**रचयामयर्चनं भक्त्या, धूप-धूम्रैर्-मनोरमैः।**

**चन्द्रप्रभु जिनं नत्त्वा, कर्म क्षरण हेतवे।।7।।**

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।

**रचयामयर्चनं भक्त्या, फलैः पूजादि-सत्फलै।**

**चन्द्रप्रभु जिनं नत्त्वा, कर्म क्षरण हेतवे।।8।।**

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः फलं निर्व. स्वाहा।

**नीर गंधादिनै द्रव्यैः, विशदार्घ्य समर्पितैः।**
**करोमि जिन पादाग्रे, मोक्ष सौख्य वरप्रदः।।9।।**

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# पञ्च कल्याणक

**(इन्द्रवज्रा)**

**चन्दपुरे काश्यां रत्नवृष्ट्या, जनाश्च धन्याः भू जन्मवत्या ।**
**चैत्रे तिथौ पंचम्याऽसिते वसत्, चन्द्रप्रभः जिन गर्भावतारे।।1।।**

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण पंचम्यां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

**जन्माभिषेकः सुरशैलमुर्ध्नि, जातः प्रभोश्चन्द्र जिनस्य यस्यां ।**
**सैकादशी में भव पौष कृष्णा, सूः लक्ष्मणा मंगलदायिनी च।।2।।**

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

**शशांक कान्तोज्ज्वल देहधारी, तथाप्-यदेहः शिवधाम्न्-यतिष्ठत् ।**
**विराग मोहोपि निजात्मरक्तः, प्रभु स मे मोह तमोहरः स्यात् ।।3।।**

ॐ ह्रीं पौष कृष्ण एकादश्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

**जन्म प्रसिद्ध दिवसे जिनेशः, दिगम्बरोऽभूत् परिहृत्य ग्रन्थिं ।**
**कैवल्य लाभेन हि सप्तमी स्यात्, पूता प्रसिद्धासित फाल्गुनी या।।4।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण सप्तम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

**तन्मासि श्युक्ला किल सपतमी या, तस्यां विमुक्तोऽखिल कर्मदूरः।**
**ज्ञानैकसिंधुर्-भुवनेक बंधु, जिनः स मेऽन्तः सततं निषीद ।।5।।**

ॐ ह्रीं फाल्गुन शुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

# जयमाला

**शून्य षट्कैक पूर्णायुः, सार्द्धचाप शतोच्छ्रितिः ।**
**महासेनात्मजः पायात्, स जिन चंद्र लांछनं।।1।।**

(भुजंग-प्रयात छन्द)

**चतुः साधिकाशीति-लक्षप्रमासु, भ्रमन्योनिषु व्याप्त दुःख सुकृच्छात्।**
**अवाप्तःप्रभो! धर्मपोतः शुभस्ते, कृपायास्ति तीर्षामि संसार वार्धि।।2।।**
**कलैकापि कालस्य न त्वद्विना स्यात्, विभो! कालचक्राद्-विमुक्तस्त्वमेव।**
**कलासर्व पूर्णस्त्रिलोकैक-चंद्रः, मया स्तूयसे निष्कलः क्षीरवर्णः।।3।।**
**प्रभो चंद्र! ते चन्द्रिका व्याप्तसर्वा-सभा दुग्धसिंधौ प्लवंतो विपापाः।**
**गणद्वादश-ख्यात-भव्या विरेजुः, सदा ते नमः स्वात्म नैर्मल्य सिद्धयै।।4।।**
**घनाच्छादितस्त्वं न नो ग्रस्तराहुः, त्वमेवासि नक्तं दिवा सुप्रकाशी ।**
**कलानां क्षयो नास्त्यपूर्वो जनानां, मनश्चंद्रकांतोत्पल-स्यंदिचन्द्रः।।5।।**
**मुखं कांतिमत्ते विलोक्यानुमन्ये, शुचैव प्रजातः क्षयीं दुस्ततः सः।**
**क्रमाद्धीयमानश्च रात्रौवुदेति, सदोदेषि त्वं-द्योतिता लोक सर्वः।।6।।**

(घत्ता)

**ये चन्द्र जिनेश्वर, नमित सुरेश्वर, तीर्थंकर मइ संथुदियं ।**
**जे पढ़इ पढ़ावइ, निजमन भावहिं, ते नर पावहिं परम पदं।।**

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

**जिनः त्रिलोक्य पूज्यस्य, 'विशद' गुण शालिनाः ।**
**लोक मंगल कर्त्तारं, कुर्युः मे मंगलं जिनः ।।**
।।इत्याशीर्वादः।।

## प्रथम वलयः

**चन्द्रप्रभा जिनाधीशा-ऽनन्तचतुष्टय युतं।**
**ऋद्धिसिद्धि शांति हेतुं, जिनेन्द्र परिपूज्येत ।।**
।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

### जन्मातिशय (अनुष्टुप छन्द)

**सुरूप सुगंधद् - देही, प्राक् संस्थान संहननं ।**
**प्रियं वचो रुधिरं, लक्षणं च सहस्रकम् ।।**
**निहार स्वेदं रहितं, जन्मस्यातिशय जिनः ।**
**प्राप्तये शतेन्द्र पूज्यं विशद, गुण शालिनाः ।।1।।**
ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्राप्त श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

### ज्ञानातिशय

**शत योजन सुभिक्षं, चाकाशे गमनं वरं ।**
**कवलाहारोपसर्ग, रहितं चतुराननम् ।**
**नख केश वृद्धिधीनं, विद्येश्वर छायां बिना ।**
**अतिशय प्राप्ते सर्व, विशदज्ञान संयुते ।।2।।**
ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय प्राप्त श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

### देव अतिशय

**सर्वार्ध मागधी भाषा, जन मैत्री द्रव्याष्टकं ।**
**सर्व ऋतु फलं वायु, विहरण मनोगतं ।।**

**आदर्श तल भू भागं, जनानन्द-कारिं तथा ।**
**धूलि कंटके भूगत, पद्मोपरि विहारिणः ।।**
**गंधोदक वृष्टिः कुर्यात्, परस्पर आह्वान सः।**
**फलभार नम्रै शालि, नभः दिश निर्मलेन् च ।।**
**धर्म चक्राग्रे गमनं, अतिशये चतुर्दश ।**
**भक्ति कुर्यात् शत इन्द्राः, जिनपदे सदा-सदा ।।3।।**

ॐ ह्रीं देवातिशय प्राप्त श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## अष्टादश दोष

**क्षुत्पिपासे भय द्वेषौ, मोह रागौ स्मृति जरा ।**
**रुग्मृती स्वेद खेदौ च, मदः स्वायो रतिर्जनिः।।**
**विषाद विस्मयावेतौ, दोषा अष्टादशे रतिः।**
**एभिर्मुक्तो भवेदाप्तो, निरञ्जन पदाश्रितः।।4।।**

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## अनन्त चतुष्टय (उपजाति छन्द)

**अनंतबोधेन विदंति शुद्धाः समुद्धयो-लोक-हिताहितं ये ।**
**तेषा यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।5।।**

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुण प्राप्त श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**पश्यंति ये पाप-परांगमुखाश्च, सतां समस्तार्थ गतां गतिज्ञाः।**
**तेषां यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।6।।**

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुण प्राप्त श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यंनिर्व. स्वाहा।

**सद्व्यक्ति शक्त्युन्निसितार्थ सार्थान्, - ज्ञातुं पराशक्ति-रिहास्ति येषां।**
**तेषां यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।7।।**

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुण प्राप्त श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यंनिर्व. स्वाहा।

**अनंतबोधादिभवं सुसातं, समस्ति येषां विदितात्मनां च।**
**तेषां यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।8।।**

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण प्राप्त श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यंनिर्व. स्वाहा।

**जन्म ज्ञानातिशयस्य, देवातिशय रुत्तमा,**
**वर्जिताष्टादश दोषः, सहितानन्त-चतुष्ट्या।**
**धारका तपो द्वादश, दश धर्म युक्तस्तथा,**
**प्रातिहार्य संयुक्तोऽर्हन् विशद ज्ञान धारकाः।।9।।**

ॐ ह्रीं अतिशय अनन्त चतुष्टय गुण प्राप्त श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# द्वितीय वलयः

**श्रियं कुवलयानन्द, प्रातिहार्य महोदयः ।**
**देवश्चन्द्रप्रभः पुष्याज् - जगन मानस वासिनीम् ।।**

**।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।**

**अष्ट प्रातिहार्य (उपजाति छन्द)**

**अशोक-वृक्षो नरदेवलोका, शोकावहो भाति जिनेश्वराणां ।**
**तेषां यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।1।।**

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष प्रातिहार्य सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**सुराग्र-हस्त-च्युत-पुष्पवृष्टिर् - वाभाति यत्रालिकुलावकीर्णा ।**
**तेषां यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।2।।**

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**सर्वार्थरूपा विशदावभासी, दिव्यध्वनिर् - भाति भवांतकाना ।**
**तेषां यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।3।।**

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि प्रातिहार्य सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**यशश्चयैश् - चामर-संचयैर्वा, सं-वीज्यमाना भुवि भांति यत्र ।**
**तेषां यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।4।।**

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि चंवर प्रातिहार्य सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**मृगारि-पीठ-स्थित-शोभमानाः, कर्म्मारि-सिंहाःखलु ये मनोज्ञाः ।**
**तेषां यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।5।।**

ॐ ह्रीं सिंहासनस्थेभ्यः प्रातिहार्य सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**कोट्यर्क तेजोधिक तेजसा ये, विभांति नेत्रप्रियभानवश्च ।**
**तेषां यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।6।।**

ॐ ह्रीं भामण्डलभूषितेभ्यः प्रातिहार्य सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**वादित्र-संत्रासित-शत्रुवारा, ब्रुवंति ये स्वागमनं नृलोके ।**
**तेषां यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।7।।**

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि प्रातिहार्य सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**छत्र त्रयैः स्वस्य विभावयंति, स्वामित्वकं ज्ञातसमस्ततत्वाः ।**
**तेषां यजे जन्म-जरापहारि, सुपादपद्मान्खलु लब्धपद्मान् ।।8।।**

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दिव्यध्वनि चामर पुष्पवृष्टिः, अशोकवृक्षः भामण्डलस्तथा ।**
**सिंहासनं दुन्दुभि रात्तपत्र, सत् प्रातिहार्यानि जिनेश्वराणा।।9।।**

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः पुर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

## तृतिय वलयः

**शुक्ल ध्यान वलेनात्र, कृतं कर्म विदारणं ।**
**परात्म पद-मारूढ, वन्देहं परमेश्वरं ।।**

**।। तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।**

### सिद्धाष्टगुणावली (अनुष्टुप-छन्द)

**सम्यक्त्वेन च सम्पन्नो, यो मिथ्यात्व निवारकः।**
**नीर चंदन पुष्पाद्यैश् - चायेऽहं तद् गुणाप्तये ।।1।।**

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व गुण सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**ज्ञानत्वेन च सम्पन्नो, यो मोह क्षय कारकः।**
**नीर चंदन पुष्पाद्यैश् - चायेऽहं तद् गुणाप्तये ।।2।।**

ॐ ह्रीं अनंतज्ञान गुण सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**दर्शनत्वेन सम्पन्नो, दर्शनावर्ण क्षायकः ।**
**नीर चंदन पुष्पाद्यैश् - चायेऽहं तद् गुणाप्तये ।।3।।**

ॐ ह्रीं अनंतदर्शन गुण सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**वीर्यत्वेन च सम्पन्नो, अन्तराय निवारकः ।**

**नीर चंदन पुष्पाद्यैश् - चायेऽहं तद् गुणाप्तये ।।4।।**

ॐ ह्रीं अनंतवीर्य गुण सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**सूक्ष्मत्वेन च सम्पन्नो, यो नामक्षय कारणात् ।**

**नीर चंदन पुष्पाद्यैश् - चायेऽहं तद् गुणाप्तये ।।5।।**

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**अवगाहन सम्पन्नो, आयुकर्म च वारणात् ।**

**नीर चंदन पुष्पाद्यैश् - चायेऽहं तद् गुणाप्तये ।।6।।**

ॐ ह्रीं अवगाहनत्व गुण सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**अगुरुलघु सम्पन्नो, गोत्र कर्म निवारकः ।**

**नीर चंदन पुष्पाद्यैश् - चायेऽहं तद् गुणाप्तये ।।7।।**

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व गुण सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**वेदनीय क्षयान् नून-मव्याबाध गुणायकः ।**

**नीर चंदन पुष्पाद्यैश् - चायेऽहं तद् गुणाप्तये ।।8।।**

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(उपजाति-छन्द)

**शुद्धस्वरूपो निजभाव लीनो, विनष्ट कर्माष्ट कलंक पंकः ।**
**भवाद् व्यतीतो जननादि हीनः, सिद्धः प्रबुद्धः सुखदः स जीयात्।।9।।**

ॐ ह्रीं अष्टगुण सहिताय श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**पूर्णार्घ्यं (शार्दूलविक्रीड़ित-छन्द)**

**इत्थं ये निरुपद्रवा भवहरा विश्वार्थ संवादिनाः ।**
**नागेन्द्रादि-महा-महार्णवपराः पापारिविध्वंसकाः ।।**
**पूर्णार्घैः परिपूजिताः परपदं प्राप्तुं पवित्राः पराः।**
**कुर्वन्तु श्रियमुत्तमां जिनवराः संघस्थ ते सर्वदाः ।।**

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

**जाप - ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।**

# जयमाला

**सर्वगुणाधिपं सारं, सर्व सौख्य करं सताम् ।**
**जिनगुणावलिं कुर्यात, विशदं शाश्वती श्रियं ।।**

**(इन्द्रवज्रा छन्द)**

**यख्यामले ज्ञानमये सुदर्शे, प्रकाशतामेति जगत्स्वरूपं ।**
**चराचराख्यं क्षितिपैर्नतं तं, चन्द्रप्रभं देव-महं स्तवीमि ।।1।।**
**सतो गुणांस्तस्य प्रभुर्न वक्तुं, क्षोणीतले कोऽपि नरोऽमरो वा ।**
**चतुष्टयानंत समुद्भवं तं, चन्द्रप्रभं देव-महं स्तवीमि ।।2।।**
**देवा असंख्यातमिता जगत्यां, संतीह ये दोष शतै-रुपेताः ।**
**न ते नृणां मोदकरा अतस्तं, चन्द्रप्रभं देव-महं स्तवीमि ।।3।।**

क्षमो भवान्काम-मतंगजस्य, मदं प्रमार्ष्टुं सकलावशस्य ।
अपूर्व कंठी-रवतां दधानं, चन्द्रप्रभं देव-महं स्तवीमि ।।4।।
अमेय सद्बोध क्लासु भासुरं, दयोदयोद्भूत कलंक वर्जितं ।
चन्द्रोऽप्यभद्रस्तुलयेत्कथ त्वां, चन्द्रप्रभं देव-महं स्तवीमि ।।5।।
नागेन्द्र - देवेन्द्र - नरेन्द्र - मुख्यैर् - दक्षै - रलक्ष्योऽसि गुणान्ग्रणद्भिः ।
अतो गुणातीतमतः समेषां, तमस्टमम् तीर्थंकरं प्रवंदे ।।6।।
सद्भक्तिगुक्ता मनुजा गुणाढ्या समर्चयन्त्यष्ट विधोपचारैः।
ते प्राप्नुवंतीह सुखानि नित्यं, वंदेऽहकं कांतगुणं जिनेशं ।।7।।
विशुद्ध बोधं दृढ़भक्तिकाय, प्रभदेहि ये त्वद्गुण रंजिताय ।
कारुण्य बुद्धया प्रभुणा हि भाव्यं, विश्वेषु मत्वेति जिनेन्द्र देव।।8।।

(मालनी छन्द)

अमित गुण गरिष्ठं, नष्टकर्मारिकष्टं ।
सकल भुवन नाथं सर्वदोष प्रमाथं ।।
समवशरण निवासः, केवल श्री निवासः ।
जयति जग-दधीशः, चारु चन्द्र जिनेशः ।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नमः चन्द्रप्रभ देव, कर्म शत्रु जयाय ते ।
सर्वसंग विनिर्मुक्तो, 'विशद' भावेन् पूजितं ।।
।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

# ।। श्री चन्द्रप्रभ स्तोत्र ।।

## (तर्ज - नरेन्द्रं फणेन्द्रं सुरेन्द्र ...............

गणेन्द्रं सुरेन्द्रादि पूजे महीषं, शतेन्द्रं गणेन्द्रादि पूजे ऋशीषं ।
नगेन्द्रं मृगेन्द्रं सदा जोड़ हाथं, त्रियोगेन पूज्यं श्री चन्द्रनाथं।।1।
प्रभो! सुन के महिमा शरण आज आए, खड़े आपके द्वार माथा झुकाए।
करें भक्ति प्रभु की जो होके श्रद्धानी, बनें जीव वे लोक में सर्व ज्ञानी।।2।।
पढ़ें मंगलाष्टक जो मंगल कराएँ, जो आगत सभी विघ्न जग के नशाएँ।
जो करके जिनाभिषेक महिमा को गाएँ, करें शांतिधारा जो शांती को पाएँ।।3।।
करें आरती भारती के सहारे, नशें विघ्न उनके अनागत के सारे।
है महिमा प्रभू की जगत में निराली, कभी भक्ति जाए न प्रभु जी की खाली।।4।।
बनें श्रेष्ठ श्रावक जो पूजा रचाएँ, त्रियोगों से श्री जिन की जयमाल गाएँ।
करें शांति एवं विसर्जन कराऐं, सदा आशिका निज के माथे चढ़ाएँ।।5।।
जो जाके जिनालय में जिन दर्श पाएँ, लगा के परिक्रमा ले अर्घ्य चढ़ाएँ।।
करें तीन आवर्त्त सिर को झुकाएँ, जो बोलें नमोस्तु हृदय हर्ष पाएँ।।6।।
सु कविराज जग में धनंजय कहाए, श्री जिन की पूजा का फल श्रेष्ठ पाए।
कभी सेठ सुत को डसा नाग कारा, जहर पुत्र का तब प्रभू तुम उतारा।।7।
सुदर्शन को शूली पे नृप ने चढ़ाया, तो शूली का सिंहासन तुमने बनाया।
महासंकटों में प्रभू को जो ध्याएँ, सभी संकटों से प्रभू जी बचाएँ।।8।।
दुखी दीन जीवों के दुःख जो नशावें, सभी आपदाएँ किए भक्ति जावें।
कोई भूत प्रेतादि बाधा सताए, प्रभू भक्ति से मुक्ति बाधा से पाए।।9।।

समन्तभद्र को भष्म व्याधी सताई, किए ध्यान प्रभु का नशी व्याधि भाई।
कहा भूप शिव पिण्डी को सिर झुकाए, नमन मेरा पिण्डी नहीं झेल पाए।।10।।
श्री चन्द्रप्रभ स्तवन प्रभु रचाए, फटी पिण्डी से चन्द्र जिन दर्श पाए।
श्री चन्द्र जिनकी किए जय जयकारे, कई जीव जिन धर्म खुश हो के धारे।।11।।
चमत्कार प्रभु जी के हैं कई निराले, जग जन के मन को हैं जो हरने वाले ।
प्रभू स्वप्न देके तिजारा में प्रकटे, दुखी दीन जीवों के दुख मेघ विघटे।।12।।
सभी भूत प्रेतादि बाधा नशाएँ, शरणार्थी जीवों के दुख जो मिटाएँ।
प्रभो! सुनके महिमा शरण आज आए, खड़े आपके द्वार माथा झुकाए।।13।।
सुनो अर्ज मेरी करो पार नैय्या, करो पार भव से विभो! जग खिवैय्या।
नमन है नमन है नमन जिन हमारे, 'विशद' भाव से हम करें जय जयकारे।।14।।

– दोहा –

भक्त आपके द्वार पर, भक्ती करें त्रिकाल ।
सुख शांती सौभाग्यमय, जीवन होय विशाल ।।
भक्त चरण में आपके, भक्ती करते नाथ!।
भव सिन्धू के पार में, हमको भी दो साथ।।

**परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज अर्घ्य**

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ्य समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें, गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य 108 विशदसागर जी यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

# आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज पूजन

स्थापना

**दोहा- विशद गुणों के कोष हैं, विशद सिन्धु है नाम।**
**विशद करें आह्वान हम, करके चरण प्रणाम॥**

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पूजा-अष्टक)

**हम हैं मन वच तन के रोगी, गुरुवर स्वस्थ आत्म के भोगी।**
**गुरुवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥1॥**

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**राग द्वेष गुरु मोह नशाए, दुख संसार के हमने पाए।**
**गुरुवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥2॥**

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

**वैभाविक परिणति में आए, शुद्धातम को हम विसराए।**
**गुरुवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥3॥**

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

**रहा काम का फूल विषैला, करते हम आतम को मैला।**
**गुरुवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥**

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**भोजन की नित चाह बढ़ाए, क्षुधा रोग से ना बच पाए।**
**गुरुवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।**
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
**आँख मीचते होय अंधेरा, जब जागे तब होय सबेरा।**
**गुरुवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।**
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
**धूल धूप की हमें सताए, कर्म पूर्ण मेरे क्षय जाये।**
**गुरुवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।**
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
**फल की आशा सदा बढ़ाई, लेकिन पूर्ण नहीं हो पाई।**
**गुरुवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।**
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! फलं निर्वपामीति स्वाहा।
**विशद अर्घ्य हम यहाँ चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य पाने हम आए।**
**गुरुवर पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।**
ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दोहा- नीर भराया कूप से, देते शांतीधार।**
**अष्टकर्म को नाश कर, मैट सकें संसार।।**

।। शान्तये शान्तिधारा।।

**दोहा- पुष्पांजलि को हम यहाँ, लाये सुरभित फूल।**
**मुक्ती पाने के लिए, साधन हों अनुकूल।।**

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

## जयमाला

दोहा- लघुनन्दन तीर्थेश के, जिनवाणी के लाल।
विशद सिन्धु गुरुदेव की, गाते हैं जयमाल।।

(छन्द-तामरस)

जय जय जय गुरुदेव नमस्ते, पूजें चरण सदैव नमस्ते।
विराग सिन्धु के शिष्य नमस्ते, उज्जवल भाग्य भविष्य नमस्ते।।
अर्हत् सम स्वरूप नमस्ते, विशद सिन्धु जग भूप नमस्ते।
अतिशय महिमा वान नमस्ते, करते जग कल्याण नमस्ते।।
शब्दों में लालित्य नमस्ते, हितकारी साहित्य नमस्ते।
वाणी जगत हिताय नमस्ते, दर्शन दर्श प्रदाय नमस्ते।।

सोरठा-पत्थर में भगवान, दिखते भक्ती भाव से।
करते हम गुणगान, गुरुवर जो साक्षात् हैं।।

सारा जग यह जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाता है।
भाव सहित जिनकी अर्चा कर, अतिशय महिमा गाता है।।
इतनी शक्ति कहाँ हम गुरु को, हृदय में शुभ आह्वान करें।
अल्प बुद्धि से उनके चरणों, का हम भी गुणगान करें।।
है श्मशान सरीखा हे गुरु!, मन मंदिर का देवालय।
आन पधारो हृदय हमारे, तो बन जाये सिद्धालय।।

दोहा- हम दोषों के कोष हैं, हुए विशद मदहोश।
दर्शन करके आपका, मन में जागा होश।।

विशद सिन्धु, हे विशद सिन्धु!, हम करते हैं चरणों वंदन।
भक्ति सुमन करते हैं अर्पित, भाव सहित करते अर्चन।।
जिनकी चर्चा अर्चा करके, खो जाए मन का क्रन्दन।
ऐसे गुरु के चरण कमल कों, करते हैं हम अभिनन्दन।।
करुणामूर्ती परम विरागी, यह जग करता अभिनन्दन।
शिव पद के राही तव चरणों, मेरा बारम्बार नमन।।

दोहा- ज्ञानामृत में भाव से, श्रद्धा का रस घोल।
तीनों योग सम्हाल के, गुरु की जय जय बोल।।

ॐ हूं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय! जयमाला
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- महिमा जिन की हैं अगम, पायें कैसे पार।
करें आरती भाव से, वंदन बारंबार।।

।। इत्याशीर्वादः । पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(संघस्थ) -ब्र. आरती दीदी

# आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः - माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....।। टेक।।
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। 1।।
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। 2।।
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। 3।।
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।। 4।।